रात्रि क्लास 13-3-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

किसके पास बैठे हो? सभी का एक ही रेसपान्स निकलेगा। यह तो बच्चे जानते हैं सुप्रीम बाबा भी है, शिक्षक भी है। बेहद का बाबा है घर भी ले जायेंगे। अभी यह तो बच्चों को निश्चय है ना। ऐसा भी हैं जिसको निश्चय नहीं है। और फिर यह भी निश्चय है बाबा कल्प2 पुरुषोत्तम संगम युग पर आते हैं। सतयुग जिसको नईदुनिया कहा जाता है वहां देवी-देवताओं का ही राज्य होता है। पुरानीदुनिया को बदली करना फिर मनुष्यों को देवता बनाना यह किसका काम है। वह कब आते हैं यह भी याद है। जानते होहम ब्राह्मण कुल के हैं। बाप ने आकर प्रजापिता ब्रहमा द्वारा अपना बनाया है। बेहद के बाप के बने हैं। नर से नारायण बनने। यह वही कथा है जो हर मास सत्यना0 दिन सुनते थे। परन्तु उससे लाभ नहीं। यह तो बरोबर बाप वह सुनाते हैं। बाप सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज़ बताते हैं। यह तो सभी का बाप है। सभी उनको बाबा बाबा कहते हैं। भक्ति-मार्ग में कहते भी हैं पतित-पावन है। तो बच्चों को विचार सागर मथन करना चाहिए। फिर समझाना चाहिए। जाते हैं बाबा अमरकथा सुनाते हैं अमरलोक लिए। नय कोई होगा तो बुधि में बैठेगा नहीं। ऐसे फिर कोई को यहां अलौ नहीं किया जाता। लिख कर देते हैं तब बुलाते हैं। फिर माया की वाकीग भी बहुत चलती है। बहुततंग करते हैं। फिर कहते हैं बाबा आप की माया। और यह तो खेल है। हमारा थोड़े ही कुछ है। उनका भी पार्ट है हमारा भी पार्ट है। वह मायागिराती है हम एक हो धक से बढ़ते हैं। यह खेल है। एमआबजेक्ट बुधि में है हम पूरा बनेंगे। पूरा योग। बाप कहते हैं बहुत जन्मों के भी अन्त में हम ने इसमें प्रवेश किया है। इन में बेहद की बाप की प्रवेशता है। इसकी ही जयन्ती बनाते हैं। यह ज्ञान ब्रहमा नहीं देते। इनका तो नाम भी नहीं है। यह है विचार सागर मथन करने की बातें। किसको समझाने में बड़ी मेहनत लगती है। कोई तो कुछ भी नहीं समझते। न समझते तो बेसमझ ठहरे। बाप पूछते हैं ना आगे कब मिले हो? तुम कहते हो जरूर बाबा से मिले थे तब तो देवता बनते हैं। इसके लिए यह कल्याणकारीसंगम युग है। कुम्भ का मेला वह तो स्थूल मनाते हैं। आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल ... बाकी वह कुम्भ आद का मेला है भक्ति मार्ग का उस से क्या मिलता है। घर में भी गंगा का पानी तो है ना। फिर गंगा में क्या जाते हो। बहुत बड़ी2 नदियां होती है जिससे नहर निकलती है। स्नान करते हैं समझते हैं पावन बनेंगे। तुम समझाते हो पतित-पावन तो बाप है।

भक्ति मार्ग के शास्त्रों में कैसी2 बातें लिख दी है। कितनी कथायें बैठ सुनाते हैं। आगे तो तुम भी सत सत करते थे। अभी बाप कहते हैं यह सभीभक्ति मार्ग की सामग्री है यहां तो सेकण्ड में जीवनमुक्ति मिलती है। बेहद का बाबा है हम उनके बच्चे हैं। बेहद का बाप सतयुग की स्थापना करते हैं। तो हम उनके मालिक बनते हैं। जो बने थे वह फिर वैसे ही बनेंगे। बाप ब्राह्मण बच्चों को ज्ञान सुनाते हैं। ज्ञान में है ही एक। मेरा तो एक दूसरा न कोई। ऐसे निश्चय बुधिहो फिर यहां आ सकते हैं। माया के तूफान आने से माया ठंडा कर देती है। लाग तो डायरेक्शन देते हैं मामेकं याद करो। बाकीसभी हैं मेरी रचना। रचना को रचना वर्सा नहीदे सकते। रचयितासे ही वर्सा मिलता है। लौकिकसे हद का लिभाग मिलता है। मैं बेहद का बाप हूं। हद के बाप से हद का वर्सा, बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। कितनी समझ की बात है। हद के बाप से जन्म-जन्मान्तर का वर्सा पाते आये हो। पतित होने कारण दिन प्रति दिन आयु कमती होती गई है। भारत में देवताओं की कितनी बड़ी आयु थी। मनुष्यों की कितनी छोटी आयु है। वह योगी थे मनुष्य भोगी बने हैं। अभी भोगी से योगी बनाने वाला कोई चाहिए ना। फिर योगेश्वर आते हैं कहते हैं मामेकं याद करो। तुमकहते हो पतित-पावन .... भक्ति मार्ग में गाते हैं पतित-पावन ..... अभी बाप समझाते हैं कैसे मैं पावन बनाता हूं। 84 पुनर्जन्म कोई ने तो लियाहोगा ना। जो सबसे पहले आये आये होंगे वही 84 पुनर्जन्म ले तमोप्रधान बने फिर वह सतोप्रधान कैसे बने। क्योंकि हिस्ट्री रिपीट होनी है।

यह बना बनाया ड्रामा है। इन में न कुछ एड हो सकता है न कुछ बदली हो सकता है। यह 84 का चक्र है। कितना सहज है बाप कहते हैं अहिल्यायें, कुबजायें गणिकायें उनको मैं पार करता हूं। यह तो सारी दुनिया ही वेश्यालय है। कोस-भर है। एक दो पर काम कटारी चलाते आते हैं। आयु कमती होती जाती है। अकाले मृत्यु हो जाती। पेट से निकला मृत्यु हुआ। पेट में भी मृत्यु हो जाता। अभी तो बाबा अमरलोक ले चलते हैं। वहां दुःख का नाम-निशान नहीं। तुम विश्व में शान्ति बनाते हो। प्राईज मिलती है यह। सभी को एक समान तो प्राईज़ मिल न सके। कोई सर्विस का सबूत देते हैं कोई कम देते हैं। माया किसको भी छोड़ती नहीं है। ठुंसा लगा देती है। काम का ठुंसा लगने से गिर पड़ते। इसलिए ही बाबा कहते हैं काम पर जीत पाने से जगत जीत बनेंगे। सम्पूर्ण निर्विकारी। यहां सभी हैं विकारी। रावणराज्य के हैं। वह पहले अपने धर्म में अच्छे थे फिर उनको भी उतरना है। बाप कहते हैं तुम्हारा स्वर्ग का सुख कितना था। कहां हो जाता है हेविन। पैराडाईज़। समझाते बहुत हैं परन्तु कोटों में कोई ही समझते हैं। रावण राज्य वाले थोड़े ही समझेंगे। कितना भी माथा मारो कब नहीं समझेंगे। वह फिर रावण राज्य में ही आते हैं। द्वापरके बाद तो बुधि बहुत होती रहती है। कोई तो बिलकुल ही नहीं समझेंगे। कोई थोड़ा समझेंगे। एक दो को शिव बाबा को याद दिलाना इससे भी बहुत कल्याण होगा। याद से ही पावन बनेंगे। मूल बात यह है। बाप कहते हैं हे बच्चों मामेकं याद करो तो पावन बन जावेंगे। पतित-पावन मैं हूं। तुम ने अनेक बार राजाई की है। तुम स्वर्ग के मालिक बने हो। यह सारी बातें तुम्हारी बुधि में है। और है बहुत सहज। जैसे आखमी (कहानी) है। बुधि यह सारा राज़ बैठा हुआ है। ऐसे सीढ़ी उतरे। डबल सिरताज थे। अभी तो कोई भी राज्य है नहीं। पंचायती राज्य हो गया है। फिर बाबा आये हैं। यह बातें समझेंगे वही जिन्हों ने कल्प समझा होगा। मंजिल है बड़ी। मनुष्य से देवता बनना बड़ा ईमतहान है। तुम बाप को याद करते हो माया उसमें विघ्न डालती है। जैसे रेडियो में आवाज़ होता है ना। यह माया भी विघ्न जरूर डालेगी। यह भी समझ यह भी जैसे कि पाई-पैसे की कहानी है। बाप तो सत्य ही सुनाते हैं। बहार वाले हंसी उड़ावेंगे। कहेंगे यह बातें तुम्हारे दादा ने सुनाई है। सतयुग तो यहां ही है। अभी यह तो तुम ही जानते हो। हरेक जैसे नईया है। नईया डूलती है परन्तु हाथ मांझी का पकड़ा होगा तो डूबेंगे कब नहीं। हाथ छोड़ा तो डूब पड़ेंगा। तुम जानते हो हम पार जा रहे हैं। मृत्यु-लोक से अमर-लोक। बाप देखते हैं आत्माओं को तो आत्मा को बड़ी खुशी होती है। बस इनको देखते रहें। क्योंकि चकमक है ना। यह बेहद का सन्यास तुमको बेहद का बाप ही सिखलाते हैं। वह तो नारी को विधवा बना देते हैं। बाप कहते हैं वह भक्ति है। ज्ञान अलग चीज़ है। वह थोड़े ही समझते हैं यह शास्त्र और भक्ति है। वह इसको ही ज्ञान समझते हैं। बाप कहते हैं भक्ति में तुम कितने बेसमझ बन पड़े हो। जो मुझ आना पड़ता है समझाने लिए। खुशी होनी चाहिए, ना हम कितने समझदार बनते हैं। यह स्कूल है, पाठशाला है। तुमको यह बनाता हूं। कब सुना जो तुमको ऐसा विश्व का मालिक बनावे। देह-धारी बना न सकें। ज्ञान का सागर शान्ति का सागर है ही एक। मनुष्य कामर्तड़ा ही नहीं। भतर्व सभी के अलग2 हैं ना। सभी एक ही एक कैसे हो सकते हैं। चर्याई हैं। मनुष्य जानते हैं यह संगम युग है। बाप समझाते हैं। तुम देवता बनने वाले हो। यह है भाग्यशाली रथ। अपना रथ किराया पर देते हैं। भागीरथ को बहुत ही मिलता होगा। यह बड़ी नदी है। सच्ची2 ममा तो यह है मा। उनका फिर एडाप्ट किया गया। नदियों में बड़ी नदी ब्रह्मा पुत्रा होती है। मेल दोनो का सागर में होता है। तुम ज्ञान सागर पास चले जाते हो। वहां देवता बन जाते हो। वहां कहते ही नहीं कि पतित, पावन गंगा। तो मनुष्य समझते हैं बड़ी मुश्किल है। समझाते2 माथा मारते तुम भी अभी समझ के बीच आये हो। समझाने लायक बने हो तब ही सर्विस पर निकले हो। रोमांच खड़ी होनी चाहिए हमको बेहद का बाप विश्व का मालिक बनाते हैं। कहते हैं अल्फ और बे को याद करो। सेकण्ड में जीवनमुक्ति फिर कहते सागर भी मसी बनाओ तो भी अन्त न होगी। ओम अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।